ग्लोबल विज़न 2000
(वाशिंगगटन डी.सी. सन् 1993)
में दिया गया उद्‌बोधन

अस्सी करोड़ हिन्दू दुनिया के सभी देशों में बिखरे पड़े हुए हैं। उनके संगठन के लिए आज से 30 वर्ष पहले विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना की गई थी। विश्वभर के हिन्दुओं को एक सूत्र में जोड़ने की बात हमारे महामना माधवराव सदाशिव राव गोलवलकर के मन में आई। उन्होंने इस सम्बन्ध में विचार करने के लिए मुझे आमंत्रित किया। मेरा उनसे बहुत पुराना परिचय था, इसके अतिरिक्त उस समय हम लोग गोवध-निषेध आन्दोलन के सिलसिले में एक-दूसरे से जुड़े हुए भी थे। हम सबने मिलकर विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना की। हम चाहते थे और हम सब की एक ही इच्छा थी - संसार भर का हिन्दू किसी एक साझे मंच पर इकट्ठा हो सके और अपनी समस्याओं के समाधान के लिए एक ऐसा रास्ता चुन सके जिस पर सब लोग मिलकर चल सकें, एक साथ विचार कर सकें। योजना बनाते हुए, अपने अतीत के गौरव का पुनः साक्षात् दर्शन कर सकें। वर्तमान समस्याओं का सम्यक् समाधान तथा भविष्य की उज्ज्वल योजनाओं का क्रियान्वयन कर सकें। मुझे खुशी है कि जिस उद्देश्य के लिए विश्व हिन्दू परिषद की स्थापना की गई थी, वह गंगा मां के प्रवाह की तरह लगातार उस उद्देश्य की ओर बढ़ती ही चली जा रही थी और आज हम इस स्थिति में आ पहुंचे हैं कि ग्लोबल विजन 2000 के रूप में हिन्दुओं का सबसे बड़ा ऐतिहासिक अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन, स्वामी विवेकानन्द के द्वारा विश्व-धर्म-सम्मेलन में दिये गये व्याख्यान के सौ वर्ष पूर्ण होने के अवसर पर होने जा रहा है। आज से सौ वर्ष पहले उनके जादू भरे शब्दों ने, उनकी वेदान्त की शिक्षाओं और भारतीय संस्कृति तथा दर्शन के काव्यमय उद्‌घोष ने अमेरिका को गुंजायमान किया था। आज उसी विश्व वन्दनीय महापुरुष की स्मृति में यह सम्मेलन होने जा रहा है। मैं विश्वभर के विभिन्न देशों से आये हुए प्रतिनिधियों का स्वागत करते हुए गौरव का अनुभव करता हूँ।

मैं अपने आदरणीय सन्तों, महात्माओं, विचारकों और नेताओं का आभार प्रकट करना चाहता हूँ जिन्होंने सब कष्ट उठाकर, इस हिन्दू पीड़ा को समझा है और आज जो हिन्दू समस्या है, उस पर सोचने के लिए समय निकाला है। आपका पुनः स्वागत है। इस विश्व हिन्दू परिषद के आदि संस्थापकों में से होने के नाते और एक जैन मुनि होने के नाते इस अवसर पर मैं भी दो-चार बातें आपसे करना चाहता हूँ। मैं अहिंसा का सेवक हूँ। विश्व शांति का कार्यकर्त्ता हूँ, हिन्दू जाति के संगठन के लिए प्रयत्नशील हूँ और वह जो हमारी हिन्दू संस्कृति है, उसके गौरवमय संस्कारों को फैलाने का प्रयत्न भी करता हूँ। हमारा भारत देश महान है जिसने अहिंसा, शांति, सहिष्णुता एवं भाईचारे का ज्ञान दिया है। हमारा देश वह देश है, जिसने मंत्र व मातृका विद्या ज्ञान दिया। भौतिक दृष्टि से गणित ज्योतिर्विद्या, धातुविज्ञान, रसायनविज्ञान, जहाज निर्माण की कला, संगीत शास्त्र, स्वरविज्ञान, अक्षर विद्या, व्याकरण विज्ञान और ऐसी हजारों विद्याएं व कला कौशल हैं, जो भारत ने दुनिया को दिये हैं लेकिन जहां तक आध्यात्मिक ज्ञान और अहिंसा का प्रश्न है, उसमें हिन्दुस्तान बेजोड़ है।

संसार के सभी मुख्य धर्मों को अपनी-अपनी जगह हासिल है। हमारे मुसलमान भाईयों के पास बावन, ईसाई भाईयों के लिए लगभग पचास तथा यहूदी बन्धुओं के लिए भी एक स्वतंत्र इजराइल राष्ट्र है। बौद्धों के लिए बहुत से देश हैं, और हिन्दुस्तान तो उनकी जन्मभूमि है ही। किन्तु हिन्दू संस्कृति और हिन्दू संस्कारों को बनाये रखने के लिए एक ही देश बच पाया है, हिन्दुस्तान, और उस पर भी हजार साल से लगातार जिस ढंग से आक्रमण होते रहे हैं, इससे हम अपने देश, अपनी संस्कृति और अपने संस्कारों को बचा पायेंगे या नहीं, यह स्वयं हमारे लिए एक विचारणीय प्रश्न बन गया है।

आज संसार के मानचित्र पर हिन्दू देश धीरे-धीरे कम होते जा रहे हैं। हिन्दू जाति सिमटती चली जा रही है। यूं तो नाना प्रकार के व्यापार- व्यवसाय के लिए हिन्दू संसार भर में फैला है, लेकिन खुद अपने देश में ही हिन्दू सिकुडता जा

रहा है। अगर हम इस स्थिति को संभाल नहीं पाये तो आने वाला भविष्य बहुत विवेचनीय हो जायेगा। संस्कृति हाथ से निकल जायेगी और हम कुछ नहीं कर पायेंगे। पश्चिमी इतिहासकारों ने जिस तरह से हिन्दू शब्द का अर्थ किया – आसिन्धु-सिन्धु-पर्यन्ता, अर्थात् सिन्धु नदी से लेकर सिन्धुसागर (हिन्द महासागर) पर्यन्त छोटे से मुल्क में रहने वाले लोग 'हिन्दू' कहलाने लगे, क्योंकि फारसी में 'स' से 'ह' बन जाता है। हिन्दू देश के विस्तार का इस प्रकार से तुच्छ सीमांकन करने का, यह एक सबसे बड़ा दुष्प्रयास था। यदि प्राचीन हिन्दू-देश की सीमायें थीं तो अफगानिस्तान का क्या होगा? और दूसरे इतने देश जिनमें इण्डोनेशिया, जावा, बाली, सुमात्रा तथा दुनिया भर के अनेक देश हैं, उनका क्या होगा? क्या वे हिन्दू देश नहीं थे? अगर अफगानिस्तान हिन्दू-देश नहीं था तो हमारे विश्व प्रसिद्ध संस्कृत वैयाकरण पाणिनी कहाँ से आये? पतंजलि और कात्यायन ऋषि कहाँ से आये? भिक्षु नागसेन के सामने राजा मिलिन्द (ग्रीक मीनाण्ड्रोस) ने जो सवाल उठाये, उनमें जो चर्चा हुई, वह किस देश में हुई? हमारे वेदों में ऐसे अनेक उल्लेख विद्यमान हैं, जिनके अनुसार भारतभूमि उत्तर में हिमालय से लेकर, दक्षिण में सागर पर्यन्त विस्तृत थी। **हमें शांति से बैठकर सोचना होगा कि आने वाला जो भविष्य होगा, उसमें हिन्दू संस्कृति बच पायेगी या नहीं। जब हिन्दुस्तान के विभाजन से पाकिस्तान बना तो देश का वह विभाजन दुर्भाग्यपूर्ण था। यहां सवाल अकेले जीने का नहीं है। अपनी संस्कृति और परम्परा के अनुसार गौरवमय जीवन जीने का है। यदि हमारी संस्कृति ही नहीं बच पायी तो कहां से जी पायेंगे? हिन्दू तो हिन्दू सभ्यता है, हिन्दू संस्कृति है और यदि हिन्दू ही नहीं है, हिन्दू राष्ट्र ही नहीं है, हिन्दू देश ही नहीं है, हिन्दू जाति ही नहीं है, तो हम शेष क्या बचा पायेंगे? और हमारे पास बचने/बचाने को रह ही क्या जायेगा?**

मध्य एशिया में सऊदी अरब जैसे कई देश हैं, जिनका अपना जो धर्म है, उसके सिवाय किसी दूसरे धर्म के शास्त्र लेकर आप वहाँ नहीं जा सकते हैं। मैं उसका खण्डन या मण्डन करने के लिए नहीं खड़ा हुआ हूँ और आपको उस नीति को अपनाने की प्रेरणा भी नहीं दे रहा हूँ क्योंकि हमारी संस्कृति बहुत उदार है। हमने अपने यहाँ कभी किसी धर्मस्थान के निर्माण का विरोध नहीं किया। इसके विपरीत हमने तो धर्म स्थान के निर्माण के लिए प्रयास और सहयोग किया है। किसी धर्मस्थान को गिराने के लिए कभी नहीं कहा। दुनिया में और कौन सा देश है जहां पर दीवार के इस ओर व उस ओर मंदिर के साथ मस्जिद बनाई गई हो? हिन्दुस्तान में ऐसा है। हमने किसी पोथी या धर्म-पुस्तक को, किसी धर्म या दर्शन को, अपने किसी विरोधी या समर्थक के विचार को हटाने की कोशिश कभी नहीं की क्योंकि हम स्वतंत्र विचारों के प्रति सदा से सहिष्णु रहे हैं, और उनका हमेशा समर्थन करते आये हैं। आचार की मर्यादा हमने जरूर मानी है, लेकिन विचार पर कभी आक्रमण नहीं किया। 'आचार' की मर्यादा का तो पालन करना ही होगा। **हमारा देश हमारी संस्कृति सिर्फ कुछ बातों पर खड़ी है। अगर आपको यही पहचान करनी है कि कौन हिन्दू है, तो जहाँ 'ॐ' का गान होता है,वह हिन्दू है। जहाँ मृत शरीर को जलाया जाता है, वह हिन्दू है। जहा अग्नि को साक्षी मानकर संस्कार होते हैं, चाहे वह जन्म हो या मृत्यु, विवाह हो या नामकरण, वह हिन्दू है। चाहे गंगा हो या गायत्री या णमोकार -मंत्र, जहा उनकी मान्यता है, इनका पाठ और गायन होता है, वह हिन्दू है जहां मंत्र का जिक्र आता है और जहां शब्द की बात कही जाती है, वह हिन्दू है। क्योंकि हमारी संस्कृति में 'शब्द' को 'ब्रह्म' माना गया है और कहा है कि 'ओंकार' रूप 'ब्रह्म' से ही इस संसार का विकास हुआ है और वह उस 'ओंकार' में ही लय हो जाता है।**

आने वाले वर्षों में आप अनिर्णय की या भ्रम और संदेह की अवस्था में नहीं जी सकते। आपको दो टूक निर्णय करना होगा। हम किसी के विरूद्ध नहीं जा रहे हैं। हिन्दू का अर्थ यह नहीं होता कि वह किसी दूसरे को सहन नहीं कर सके। हिन्दू राष्ट्र का अर्थ यह है कि जहां न केवल सब मनुष्य बल्कि मनुष्य के अलावा और जितने प्राणी व पशु-पक्षी हैं, ये जो सारा जीव-जगत् है, सभी शांति और आनन्दपूर्वक जी सके। देवताओं ने भगवान महावीर से अपने धर्मतीर्थ का प्रवर्त्तन करने की प्रार्थना करते हुए जिन शब्दों का प्रयोग किया है, उन पर ध्यान दीजिए – 'सव्वजगजीवहिंय तित्थं पवत्तेहि' अर्थात् भगवन् आप जगत के सर्व जीवों के हित और कल्याण के लिए अपने धर्म रूपी तीर्थ का प्रवर्त्तन कीजिए। भगवान बुद्ध ने कहा था 'चरथ भिक्खवे चारिकं बहुजन हिताय बहुजन सुखाय'। भिक्षुओं! संसार के कल्याण के लिए विचरण करो। यह सम्पूर्ण वसुधा एक कुटुम्ब

है। वसुधैव कुटुम्बकम। इसमें सभी सुखपूर्वक और निरोग रहें (सर्वे भवन्तु सुखिनः सर्वे सन्तु निरामया) यही हिन्दू संस्कृति की भावना और आदर्श है। इस संस्कृति पर किसी भी तरह के आक्रमण और विनाश को अब हम सहन नहीं करेंगे। इस संस्कृति की सुरक्षा हो सके यही आज हमारा प्रमुख उद्देश्य है। इसमें साम्प्रदायिक विद्वेष के लिए कोई स्थान नहीं है। इसमें सभी अपना कर्मकाण्ड, अपनी पूजा और उपासना, जैसे चाहे वैसे, अपनी-अपनी पद्धति और इच्छा के अनुसार करने के लिए स्वतंत्र है लेकिन जहां तक इस संस्कृति और उसकी सुरक्षा का प्रश्न है, उसमें हम सब एक हैं। इसे जिस तरह बचाया जा सके, उसके लिए हमें प्रयास करना है। जब तक हमारा राष्ट्र-राज्य इस की सुरक्षा की गारण्टी नहीं देता, तब तक हम चुप नहीं बैठ सकते।

अभी आपने देखा कि एक विवादास्पद ढांचे को लेकर जो झगड़ा पैदा हुआ, उसमें 563 हिन्दू मंदिर, 6 जैन मंदिर, 2 गुरुद्वारे ध्वस्त कर दिये गये। पचास हजार करोड़ की सम्पत्ति का नाश हुआ। इसका कारण अगर कहीं है तो वह हमारे उस संवैधानिक ढांचे में हैं, जहाँ से हमें राष्ट्रीय होने का अनुशासन मिलता है। हम अपने संविधान का पूर्ण आदर करते हैं, परन्तु मैं एक सुझाव जरूर देना चाहता हूँ कि देश का एक ही संविधान रहे और उसमें देश के नागरिकों का अल्पमत/बहुमत जैसा कोई भेद व बंटवारा न किया जाए।

आज जिस सम्मेलन का यहां आयोजन है, जिसमें हम सब भाग ले रहे हैं, उसमें हमें यह निश्चय करना है कि जिस जाति ने भगवान महावीर को पैदा किया, जिस संस्कृति ने भगवान बुद्ध को जन्म दिया ओर करूणा का संदेश दिया, जहाँ तीर्थंकरों की परम्परा सदा से अहिंसा का संदेश देती आई, जहाँ बुद्ध और बोधिसत्व सदा संसार के कल्याण के लिए लगे रहे, जहां भगवान राम सबको कर्त्तव्य का उद्‌बोधन देते रहे, जहां भगवान कृष्ण ने गीता का अमर संदेश दिया और जहां हमारे गुरु, हमारे आचार्य, हमारे ऋषि इसको संभालते आये, उस देश, उस संस्कृति और परम्परा को हम कैसे बचा सकते हैं? उसको हम कैसे चला सकते हैं? आगे आने वाली पीढ़ियों और परम्पराओं को कैसे सुशिक्षित कर सकते हैं? यही हमारे सामने मुख्य प्रश्न है। अज्ञान में हम रहना नहीं चाहते और लोभ में हम फंसना नहीं चाहते। अब निद्रा का समय नहीं है, जागने का समय है, निर्णय होगा, लेकिन जाग कर होगा, सोते हुए नही होगा, लोभ में नहीं होगा और भविष्य को उज्जवल बनाये रखने के आश्वासन के साथ होगा।

हमें इस संसार में दो काम करने हैं। एक यह कि अहिंसा का प्रचार हो, उसके लिए आपको मालूम है कि हम यहाँ यूनाइटेड नेशन्स की सहायता व सहयोग से अन्तर्राष्ट्रीय अहिंसा विश्वविद्यालय की स्थापना कर रहे हैं, दूसरा यह कि संसार यह जान ले कि हम भारत में हिंदुत्व की रक्षा के लिए कटिबद्ध हैं, जिसमें देश के प्रत्येक नागरिक का जीवन और सम्पत्ति तथा धार्मिक स्वतंत्रता पूर्णरूप से सुरक्षित रहेंगी, लेकिन अपने सांस्कृतिक मूल्यों को खत्म करके नहीं। उसमें जो भी हमारा सहयोगी बनता है, हम उसके साथ हैं और नहीं बनता तो हमें उसे समझाना चाहिए। हमें कोशिश करनी चाहिए। आवश्यकता है सिर्फ अपनी बात को ढंग से समझाने की। हम किसी भी तरह आक्रामक होकर नहीं चल रहे हैं। किसी दूसरे देश, जाति या धर्म पर आक्रमण करना न हमारे रक्त में है और न इतिहास में। हमें तो सबका प्रेम, मैत्री और सहयोग लेकर साथ चलना है।

हमारी जो धर्म-परम्परा है, उसका सार क्या है, उसे भी सोचने की कोशिश कीजिए। अलग-अलग धर्मों के नाम पर, या जिनमें कोई एक धर्म प्रमुख है, ऐसे अनेक धार्मिक राज्य व राष्ट्र विद्यमान हैं। **उनके अनुकरण पर हम अपने देश को एक धार्मिक राज्य बनाने की बात नहीं कर रहे हैं। किन्तु भारत में हिन्दू-संस्कृति को प्रमुखता अवश्य मिलनी चाहिए, यह हम जरूर चाहते हैं। भारत के नागरिकों के सामने यह प्रश्न है कि अपनी उदार संस्कृति को वे कैसे बचा सकेंगे? हिन्दू के सामने यह सवाल है कि आने वाले वर्षों में वह अपने महान् सांस्कृतिक जीवन-मूल्यों का, और अपनी उस विशेष जीवन-शैली को जो हजारो-हजार सालों की धरोहर के रूप में उसे प्राप्त हुई है, उसे कैसे सुरक्षित रख पायेगा? इस पर हमें सोचना है। इसी सोच के लिए यह आयोजन है।** इसमें आपको ऐसे कुछ ठोस निर्णय लेने हैं, और ऐसी प्रतिज्ञा करनी है कि जिससे हम और हमारे देश के सभी नागरिक अपने अतीत के गौरव और भविष्य की उज्जवलता को सामने रखते हुए, वर्तमान में स्वधर्म और स्व-संस्कृति के अनुरूप आचरण के द्वारा आत्मसम्मानपूर्वक जी सकें। हम केवल यही चाहते हैं। ऐसा करने पर ही हमारा यह आयोजन उचित और सार्थक रीति से सम्पन्न हो सकेगा और उसी में सबका आनन्द-मंगल सुनिश्चित होगा।